Q. 1. शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत दर्शन में माया की अवधारणा क्या है और इसका क्या महत्व है?

Ans. शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत दर्शन में माया की अवधारणा : शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत दर्शन भारतीय दर्शन की एक प्रमुख धारा है, जिसमें अद्वैत (अद्वैतवाद) के सिद्धांत पर जोर दिया गया है। इस दर्शन के अनुसार, ब्रह्म (सर्वोच्च वास्तविकता) ही एकमात्र सत्य है और यह निराकार, अनंत, और अपरिवर्तनीय है। संसार और उसकी विविधता को माया के माध्यम से समझाया गया है। माया अद्वैत वेदांत का एक केंद्रीय सिद्धांत है, जो सृष्टि, जगत और जीव के अस्तित्व की व्याख्या करता है।

माया की अवधारणा : शंकराचार्य के अनुसार, माया वह शक्ति है जो ब्रह्म की वास्तविकता को छिपाती है और जगत को वास्तविक रूप में प्रकट करती है। माया के कारण ही यह संसार और उसकी विविधता वास्तविक प्रतीत होती है, जबकि वास्तविकता में यह सब मिथ्या (भ्रम) है। माया को अद्वैत वेदांत में निम्नलिखित रूपों में परिभाषित किया गया है :

1. **अविद्या (अज्ञान) :** माया का प्रमुख गुण अविद्या या अज्ञान है। यह अज्ञान ही जीव को अपने वास्तविक स्वरूप (ब्रह्म) से वंचित करता है और उसे जगत के बंधनों में फंसा देता है। जीव माया के कारण अपने आप को शरीर और मन के साथ जोड़कर देखता है और अपने शुद्ध आत्मा से भिन्न मानता है।
2. **विक्षेप शक्ति :** माया की विक्षेप शक्ति वह है जो सृष्टि का निर्माण करती है। यह शक्ति ब्रह्म की असीम संभावनाओं को विविध रूपों और नामों में प्रकट करती है। सृष्टि के विविध रूप और घटनाएँ माया की विक्षेप शक्ति के परिणाम हैं।
3. **आवरण शक्ति :** माया की आवरण शक्ति वह है जो ब्रह्म की वास्तविकता को ढकती है। यह शक्ति जीव के ज्ञान को आच्छादित कर देती है, जिससे वह ब्रह्म के सत्य स्वरूप को नहीं पहचान पाता। यह आवरण शक्ति ही जीव को संसार में भ्रमित और बंधित रखती है।

☐ **माया का महत्व :** माया का अद्वैत वेदांत में महत्वपूर्ण स्थान है और इसके महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है :

1. **सृष्टि की व्याख्या :** माया के माध्यम से शंकराचार्य ने सृष्टि की व्याख्या की है। माया के कारण ही यह संसार विविध रूपों में प्रकट होता है और जीवों का अनुभव होता है। माया के बिना सृष्टि का अस्तित्व संभव नहीं है।
2. **जीव का भ्रम :** माया के कारण जीव अपने वास्तविक स्वरूप (ब्रह्म) को नहीं पहचान पाता और शरीर और मन के साथ अपनी पहचान बना लेता है। यह भ्रम ही जीव को संसार के दुख और बंधनों में फंसा देता है। माया के कारण जीव जन्म, मृत्यु, और पुनर्जन्म के चक्र में फंसा रहता है।
3. **आत्म–ज्ञान की आवश्यकता :** माया के आवरण को हटाने के लिए आत्म–ज्ञान की आवश्यकता होती है। शंकराचार्य के अनुसार, आत्म–ज्ञान के माध्यम से ही जीव माया के आवरण को हटा सकता है और अपने वास्तविक स्वरूप (ब्रह्म) का अनुभव कर सकता है। आत्म–ज्ञान से जीव माया के बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है।
4. **वैराग्य और विवेक :** माया के प्रभाव से मुक्त होने के लिए वैराग्य (विरक्ति) और विवेक (विवेकशीलता) का अभ्यास आवश्यक है। वैराग्य से जीव सांसारिक वस्तुओं और इच्छाओं से मुक्त होता है, जबकि विवेक से वह सत्य और असत्य, स्थायी और अस्थायी के बीच भेद कर सकता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com